राजभाषा नीति के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में संस्थान द्वारा किये गये प्रयासों, उपलब्धियों एवं आगामी योजनाओं का संक्षिप्त विवरण

गोविन्द वल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान कोसी – कटारमल, अल्मोड़ा

***

1. संस्थान का संक्षिप्त परिचय

गोविन्द वल्लभ पंत हिमालय पर्यावरण एवं विकास संस्थान की स्थापना भारत रत्न पं0 गोविन्द वल्लभ पंत जी के जन्म शताब्दी वर्ष 1988 में उनके जन्म स्थान खूंट (अल्मोड़ा) के पास कोसी–कटारमल में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार के एक स्वायत्तषासी संस्थान के रूप में हुई थी। इस संस्थान का मुख्य उद्देष्य अपने मुख्यालय अल्मोड़ा एवं भारतीय हिमालय क्षेत्र में अवस्थित चार क्षेत्रीय इकाईयों, एवं पर्यावरण मंत्रालय, नई दिल्ली में स्थित पर्वतीय प्रभाग इकाई के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय हिमालय क्षेत्र के पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु अनुसंधान एवं विकास कार्य करना है। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने अपने कार्यालय ज्ञापन सं. 15/39/2015–सी.एस.–I दिनांक 6 जून 2016 के द्वारा संस्थान को राष्ट्रीय संस्थान ''गोविन्द बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान'' के रूप में उच्चीकृत किया।

2. राजभाषा नीति क्रियान्वयनः प्रमुख प्रयास

- अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करना, एवं समय–समय पर दिषा–निर्देष जारी करना, संस्थान की वैबसाईट को द्विभाषी बनाना, कम्प्यूटरों में हिन्दी साफ्टवेयर उपलब्ध करवाना, पुस्तकालय में हिन्दी पुस्तकों की खरीद बढ़ाना, 65 विषयों में तकनीकी शब्दावली कोष क्रय करके वैज्ञानिकों व षोधार्थियों को उपलब्ध करवाना, बैठकों की कार्यसूची/कार्यवृत्त द्विभाषी रूप में जारी करना, नियमित हिन्दी कार्यषालाएं आयोजित करना, प्रतिवर्ष हिन्दी पखवाड़ा (14–28 सितम्बर) मनाना तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को प्रोत्साहन स्वरूप नकद पुरस्कार वितरित करना एवं संस्थान द्वारा हिन्दी राजभाषा पत्रिका ''हिमप्रभा'' का वर्ष 2008 से निरन्तर प्रकाषन किया जाना आदि प्रमुख प्रयास रहे हैं।

3. राजभाषा नीति क्रियान्वयनः प्रमुख उपलब्धियाँ

- संसदीय राजभाषा समिति द्वारा विगत दिनांक 22.06.2013 को संस्थान के प्रथम राजभाषायी निरीक्षण के आष्वासनों पर संस्थान द्वारा अनुवर्ती कार्यवाही की गई। इस Øम में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अधिसूचना सं. 1582 नई दिल्ली 8 जूलाई 2013 का.आ. 2075 (अ) के द्वारा इस संस्थान को भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित किया गया।

- संस्थान में दिनांक 31.03.2017 की स्थिति के अनुसार अधिकारियों/कर्मचारियों की कुल संख्या (वर्ग 'घ' तथा समकक्ष कर्मचारियों को छोड़कर) 70 है जिनमें से 59 (84.3%) हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है

शेष 11 (15.7%) को हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। संस्थान में हिन्दी में प्रवीण/कार्यसाधक 30 अधिकारी/कर्मचारी 51–75% तक एवं 36 अधिकारी/कर्मचारी 76% से अधिक कार्य हिन्दी में करते हैं। अतः वर्ष 2013 के सापेक्ष 26 (37%) अधिकारी/कर्मचारी वर्तमान में 76% से अधिक कार्य हिन्दी में कर रहे है।

- वर्ष 2016–17 की अवधि में संस्थान द्वारा अपनी ओर से 'क' 'ख' 'ग' क्षेत्रों में स्थित केन्द्र सरकार के मंत्रालयों विभागो/कार्यालयों आदि को भेजे गये पत्रों का प्रतिषत क्रमषः 92.8%, 92.9%, व 71.2% रहा। अतः 2013 की स्थिति– 'क' क्षेत्र (64.2%) 'ख' क्षेत्र (0.0 %) व 'ग' क्षेत्र (49.6%) के सापेक्ष इस दिषा में उल्लेखनीय बृद्धि हुई। पुनः 2016–17 के दौरान 76.1% टिप्पणियां पत्रावलियों में हिन्दी में लिखी गई एवं इस लक्ष्य को 100% तक प्राप्त करने हेतु हम प्रयासरत है।

- संस्थान द्वारा विगत 3 वर्षो में पुस्तकालय में हिन्दी पुस्तकों के क्रय पर व्यय की गई राषि पुस्तकों पर व्यय की गई कुल राषि का 55.7% रहा। अतः संस्थान हिन्दी पुस्तकों के क्रय पर निरन्तर प्रगति कर रहा है (वर्ष 2014–15 में 49.8%, 2015–16 में 54.27%, 2016–17 में 63.9%)।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अल्मोड़ा की बैठकों में भी संस्थान की राजभाषा समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों द्वारा सक्रिय रूप से प्रतिभाग किया जाता है। तथा संस्थान के पास राजभाषा नीति के क्रियान्वयन तथा अनुवाद आदि कार्य करने हेतु कोई भी पूर्णकालिक अधिकारी/कर्मचारी न होने पर भी संस्थान द्वारा राजभाषा अधिनियम/नियम के अनुपालन में शत–प्रतिषत लक्ष्य प्राप्त करने हेतु भरसक प्रयास किये जा रहे है तथा वर्ष 2013 जून के प्रथम संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किये गये प्रथम निरीक्षण के उपरान्त हमने अपने लक्ष्य को पाने हेतु आषातीत बृद्धि की है।

4. राजभाषा नीति क्रियान्वयनः आगामी योजनाएं

- राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के शत–प्रतिषत लक्ष्य की प्राप्ति हेतु संस्थान द्वारा आगामी वर्षो में हिन्दी कार्यषालाऐं, त्रैमासिक विभागीय बैठक/सम्मेलन/संगोष्ठियां, हिन्दी पत्रिका का प्रकाषन, हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगितायें एवं पुरस्कार वितरण, हिन्दी/द्विभाषी पुस्तिकाओं एवं प्रषिक्षण सामग्री का प्रकाषन, एवं शोधार्थियों एवं वैज्ञानिकों को अपने शोध परिणामों को हिन्दी मे प्रकाषित करने हेतु प्रोत्साहित करने के विषेष प्रयास किये जायेगें।

- राजभाषा के प्रयोग द्वारा वैज्ञानिक निष्कर्षो को जनसाधारण तक पहुॅचाने, स्कूली विद्यार्थियों को प्रकृति विज्ञान के प्रति अभिरूचि बढ़ानें तथा शोधार्थियों को हिन्दी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करने के क्रम में प्रषिक्षण, कार्यषालाओं, व प्रकृति षिविरों को हिन्दी माध्यम में अधिक से अधिक कराने के प्रयास किये जायेगें।

(पीताम्बर प्रसाद ध्यानी)
निदेशक/अध्यक्ष, राजभाषा समिति
गो.ब.प.रा.हि.प.स.वि.सं.